Volume-12, No. 2 Aug.-2025, pp. Hin.23-26

उत्तर प्रदेश के बहराइच जनपद के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति तथा सामान्य जाति की बालिकाओं की वैयक्तिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

मिस. नेहा चौधरी, शोध छात्रा
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छत्तरपुर, मध्यप्रदेश भारत ।
प्रो0 निति नवीन,
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छत्तरपुर, मध्यप्रदेश भारत।

सार–
विद्यालय में बालिकाओं को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिससें इनकी शिक्षा प्रभावित होती है एवं उनका सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता है। बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं में प्रमुख हैं– सामाजिक, विषय चयन, पारिवारिक, रूचि, विद्यालय, स्वास्थ्य, यातायात, धन, शारीरिक विकास, कार्य, सांमजस्य, समायोजन सम्बन्धी समस्याएं। व्यक्तिगत समस्याओं से सम्बन्धित कुछ अध्ययन शोधार्थी को उपलब्ध हुए है जिनमें कुमार विश्वास एवं कुमार विष्णु (2017) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यालयों में बहुधा ऐसे बालक देखने को मिल जाते है जो अपेक्षित सामान्य व्यवहार नहीं करते और इस प्रकार किसी न किसी समस्या के जनक होते है। कोई बालक घर से विद्यालय जाता है और पार्क में ही बैठ जाता है, कोई विद्यालय पहुँचता है पर कुछ देर बाद विद्यालय से भाग जाता है कोई दूसरों की वस्तुएँ चुरा लेता है, झूठ बोलता है, गालिया बकता है या अक्सर सबसे लड़ता–झगड़ता है, कोई बालक गृह–कार्य नहीं करके लाता है तो कोई विद्रोही, अनुशासन हीन या उदासीन हो जाता है। अपने इन व्यवहारिक विचलनों के कारण ये बालक अध्यापकों, स्कूल व्यवस्थापकों व माता–पिता सभी के समक्ष कोई समस्या खड़ी करते रहते हैं, सभी क्षेत्रों में उपलब्धि में पिछड़ जाते है तथा समाज में समायोजित नहीं हो पाते।
मुख्य शब्द– व्यक्तिगत समस्याए, समायोजन सम्बन्धी समस्याएं, विद्यालय समस्याए।

प्रस्तावना–

जनजातियों में शिक्षा की कमी है, शिक्षा के अभाव में आज भी कई जनजातियाँ परम्परागत विधि से जीवनयापन करती हैं। वे देश की प्रगति की धारा से पृथक हैं। शिक्षा के अभाव में कई जनजातियाँ शोषण का शिकार हैं व समय के साथ विकास नहीं कर पा रही हैं।

जनजातीय लड़कियाँ सामान्य वर्ग की लड़कियों के साथ घुल–मिल कर एक साथ विद्यालयों मे रहती हैं। दोनों वर्गों के बच्चों को एक साथ एक ही वातावरण में शिक्षा प्रदान की जाती है। एक समान शैक्षिक वातावरण मिलने पर सामान्य जाति के बच्चों की तुलना में इन बालिकाओं की आज क्या स्थिति हैं? इस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से इस शोध समस्या का उद्भव हुआ है।

साहित्य समीक्षा–

आशा सिंह (1999), नें अपने अध्ययन में स्त्री समस्याओं में पाया कि लिंग, विषय वर्ग एवं शिक्षा के माध्यम के आधार पर स्त्री सम्बन्धी समस्याओं के प्रति स्नातक स्तर पर छात्र–छात्राओं के विचारों में भी कोई भिन्नता नहीं देखने को मिलती है।

कीर्ति वर्मा (2001), ने अपने अध्ययन में सामाजिक आर्थिक स्तर के उच्च मध्यम तथा निम्न वर्गों के छात्र तथा छात्राओं की सामाजिक समस्या में कोई खास अन्तर नहीं पाया। इसका कारण निम्न सामाजिक आर्थिक वर्ग के अभिभावकों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आना था कि लड़का लड़की दोनों के समान समझना चाहिए।

विजय लक्ष्मी (2003), ने अपने अध्ययन में जनजातीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की समस्या का चयन किया था अध्यापकों द्वारा शैक्षिक सहायता में कमी, अध्यापकों की अनुपस्थिति, विद्यालय परिसर में कीड़ों का प्रकोप, विद्यालय समय उनके अनुकूल न होना तथा विद्यालय से शिक्षकों की अनुपस्थिति अधिक महत्वपूर्ण थी। इस अध्ययन में यही भी पाया गया है कि बालकों के सम्मुख बालिकाओं की तुलना में अधिक समस्या थी।

जोशी 2003, ने अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि बालकों के शैक्षिक व्यक्तिगत सामाजिक एवं सम्पूर्ण आकांक्षाओं का उनके आत्मविश्वास के साथ सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध था। सामाजिक रूझान का भी बालकों के आत्मविश्वास से सार्थक धनात्मक सह सम्बन्ध पाया गया।

उपर्युक्त अध्ययनों से प्राप्त निष्कर्षों में स्पष्ट विरोधाभास प्रतीत होता है इन सभी अध्ययनों में छात्र–छात्राओं की व्यक्तिगत समस्याओं के अध्ययन के विवरण प्राप्त हुए है परन्तु विभिन्न वर्गों की बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं के विवरण उपलब्ध नही है। इसीलिए अनुसंधानकर्ती ने जनपद बहराइच के अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य बालिकाओं की सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करने का निश्चय किया।

शोध अध्ययन के उद्देश्य–

1. जनपद बहराइच के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनूसूचित जनजाति की बालिकाओं की वैयक्तिक समस्याओं को ज्ञात करना।
2. जनपद बहराइच के पूर्व माध्यमिक स्तर अध्ययनरत सामान्य जाति की बालिकाओं की वैयक्तिक समस्याओं को ज्ञात करना।
3. जनपद बहराइच की पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनूसूचित जनजाति एवं सामान्य जाति की बालिकाओं की वैयक्तिक समस्याओं की तुलना करना।

शोध अध्ययन के परिकल्पानाएं–

1. जनपद बहराइच के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की वैयक्तिक समस्यायें सामान्य है।
2. जनपद बहराइच के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य जाति की बालिकाओं की वैयक्तिक समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. जनपद बहराइच के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जन जाति एवं

सामान्य जाति की बालिकाओं की वैयक्तिक समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

आकड़ों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण–

अनुसंधानकर्ती ने एक स्वयं निर्मित व्यक्तिगत समस्या मापनी का प्रयोग आकड़े प्राप्त करने के लिए किया है। इन आकड़ों को स्वास्थ्य सम्बन्धी, विद्यालय सम्बन्धी, परिवार सम्बन्धी, भावी जीवन सम्बन्धी तथा सामान्य सम्बन्धों से सम्बन्धित चरों पर आकड़ें 255 अनुसूचित जनजाति तथा 255 सामान्य जाति से सम्बन्धित बालिकाओं के प्राप्त किये, इन आकड़ों के मध्यमान मानक विचलन एवं क्रान्तिक मान ज्ञात किया जिनका वर्णन परिकल्पनाओं के आधार पर किया गया है–

परिकल्पना –1

इस परिकल्पना में अनुसूचित जनजाति को बालिकाओं के मध्यमान तथा मानक विचलन ज्ञात किये गये है जो इस प्रकार है–

सारणी–1

अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं के मध्यमान तथा मानक विचलन

क्र. स.	व्यक्तिगत समस्याएं	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
1	स्वास्थ्य सम्बन्धी	255	26.67	9.746
2	विद्यालय सम्बन्धी	255	26.17	10.67
3	परिवार सम्बन्धी	255	27.42	9.93
4	भावी जीवन सम्बन्धी	255	23.62	10.26
5	सामान्य सम्बन्धों सम्बन्धी	255	24.93	10.22

उपर्युक्त सारणी से यह ज्ञात होता है कि 255 अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का मध्यमान 26.67 तथा मानक विचलन 9.746 है। ठीक इसी प्रकार विद्यालय सम्बन्धी, परिवार सम्बन्धी, भावी जीवन सम्बन्धी तथा सामान्य सम्बन्धों सम्बन्धी समस्याओं के मध्यमान क्रमशः 26.17, 27.42, 23.62 तथा 24.93 एवं मानक विचलन 10.67, 9.93, 10.26 तथा 10.22 है।

उपर्युक्त समस्याओं के मध्यमान से यह प्रतीत होता है कि अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की सभी समस्याओं में परिवार सम्बन्धी समस्याएं प्रमुख है क्योंकि इनका मध्यमान (27.42) सर्वाधिक है। उपर्युक्त तालिका से यह भी स्पष्ट है कि इन बालिकाओं को अपने भावी जीवन की समस्याओं की चिन्ता अधिक नही है क्योंकि इनका मध्यमान (23.62) सबसे कम है। शेष समस्याएं उनके लिए सामान्य। चूंकि इन समस्याओं के मध्यमान 23.62 से लेकर 27.42 तक के बीच में आते है। इससे यह भी ज्ञात किया जा सकता है कि ये समस्याएं सामान्य हैं क्योंकि इनका प्रसार अधिक नही है। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हमारी परिकल्पना को स्वीकार किया गया है।

परिकल्पना–2 इस परिकल्पना में सामान्य जाति की बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं के मध्यमान तथा मानक विचलन प्राप्त किए गये है।

सारणी–2

सामान्य जाति की बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं के मध्यमान तथा मानक विचलन

क्र. स.	समस्याएं	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
1	स्वास्थ्य सम्बन्धी	255	24.4	9.77
2	विद्यालय सम्बन्धी	255	23.93	10.08
3	परिवार सम्बन्धी	255	25.28	10.67
4	भावी जीवन सम्बन्धी	255	24.97	10.09
5	सामान्य सम्बन्धों सम्बन्धी	255	26.197	10.81

उपर्युक्त सारणी से यह ज्ञात होता है कि न्यादर्श की 255 सामान्य जाति की बहराइच जनपद की पूर्व माध्यमिक विद्यालयों की बालिकाओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के मध्यमान 24.4 तथा मानक विचलन 9.77 है। इसी प्रकार अन्य समस्याओं का यथा विद्यालय सम्बन्धी, परिवार सम्बन्धी, भावी जीवन सम्बन्धी एवं आपसी सम्बन्धों सम्बन्धी समस्याओं के मध्यमान क्रमशः 23.93, 10.08, 25. 28, 10.07, 24.97, 10.09 तथा मानक विचलन क्रमशः 26.147 व 10.81 है।

इन सभी मध्यमानों में सर्वाधिक संख्या 26.97 है, जो यह प्रदर्शित करती है कि न्यादर्श की सामान्य जाति की बालिकाओं में सर्वाधिक समस्या आपसी सम्बन्धों सम्बन्धी है। चूंकि सबसे कम मध्यमान विद्यालय सम्बन्धी समस्याओं का रहा। जिसका मान 23.43 है। इसका अर्थ यह निकला कि इन बालिकाओं को विद्यालय में अपेक्षाकृत कम समस्याओं का सामना करना पड़ता है। शेष समस्याएं सामान्य पाई गयी। इन सभी समस्याओं के मध्यमानों का मान औसत के आस–पास है। जिससे यह निष्कर्ष भी ज्ञात किया जा सकता है कि सामान्य जाति की समस्याएं सामान्य है इस प्रकार हमारी परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

परिकल्पना–3

इस परिकल्पना में सामान्य तथा अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं के मध्यमान मानक विचलन तथा क्रान्तिक मान प्रदर्शित किए गये हैं।

सारणी–3

सामान्य तथा अनुसूचित जनजाति की 255 बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्या के मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक मान

क्र.	व्यक्तिगत समस्याएं	सामान्य जाति		अनुसूचित जनजाति		क्रान्तिक मान (सी.आर.)	सार्थकता स्तर
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
1	स्वास्थ्य सम्बन्धी	24.40	09.77	26.67	09.746	02.66	.01
2	विद्यालय सम्बन्धी	23.93	10.08	26.17	10.67	02.44	.05
3	परिवार सम्बन्धी	25.28	10.67	27.42	09.93	02.343	.05
4	भावी जीवन सम्बन्धी	24.97	10.09	23.62	10.26	01.90	N.S*
5	सामान्य सम्बन्धों सम्बन्धी	26.147	10.81	24.93	10.22	01.31	N.S*

*NS सार्थक नहीं

उपर्युक्त सारणी से यह स्पष्ट है कि सामान्य तथा अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का क्रान्तिक मान 2.66 प्राप्त हुआ जो .01 स्तर पर सार्थक पाया गया। इसके साथ ही उपर्युक्त दोनों वर्गों की बालिकाओं के विद्यालय एवं परिवार सम्बन्धी समस्याओं का क्रान्तिकमान क्रमशः 2.44 तथा 2.343 पाए गये जो सार्थकता स्तर से .05 स्तर पर सार्थक है। शेष भावी जीवन तथा आपसी मित्रता बनाने की समस्याओं के क्रान्तिकमान क्रमशः 1.9 तथा 1.31 थे जो सार्थक नही पाए गये और इन दोनों समस्याओं के आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना स्वीकार की गयी जबकि स्वास्थ्य, विद्यालय एवं परिवार सम्बन्धी समस्याओं पर निर्मित शून्य परिकल्पनाएँ सार्थक अन्तर प्राप्त होने के कारण निरस्त की गई।

निष्कर्ष–

1. जनपद बहराइच की पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की वैयक्तिक समस्याएं सामान्य है।

2. जनपद–बहराइच की पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य जाति बालिकाओं की वैयक्तिक समस्याएं सामान्य है।
3. जनपद–बहराइच की पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं का स्वास्थ्य, विद्यालय तथा परिवार सम्बन्धी समस्याएं सामान्य जाति की बालिकाओं से अधिक पाई गयी।
4. बहराइच जनपद की पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति तथा सामान्य जाति की बालिकाओं की भावी जीवन की समस्याएं तथा आपसी सम्बन्धों व मित्रता बढ़ाने की समस्या में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. **कुमार विष्णु (2017)** समस्यात्मक बालकों की समस्या एवं समाधान ग्लोबल जनरल फार एनालाइसिस वायलूम नं0–6 जुलाई 2017।
2. **सिंह, आशा (1999):** स्त्री समस्याओं के प्रति स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं के दृष्टिकोण का अध्ययन,'' लघुशोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, लखनऊ विश्वविद्यालय।
3. **वर्मा, कीर्ति (2001):** ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्र–छात्राओं की समस्याओं तथा शैक्षिक आवश्यकताओं का अध्ययन,'' शोधप्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, कानपुर विश्वविद्यालय।
4. **विजया लक्ष्मी, जी० (2003):** ''प्राब्लम्स ऑफ सेकेन्ड्री स्कूल ट्राइबल चिल्ड्रेन,'' इन इण्डियन एजूकेशनल एब्सट्रक्टस, वाल्यूम–6, अक–1, जनवरी 06।
5. **जोशी, तिलक चन्द्र (2003):** ''ए स्टडी ऑफ सोशल एटीट्यूडस लेवल ऑफ एस्प्रेशन एण्ड स्कॉलॉस्टिक अचीवमेन्ट एज कोरिलेशन्स ऑफ सेल्फ कॉनफीडेन्स शोधप्रबन्ध,'' शिक्षाशास्त्र, कुमायूँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।
6. **माथुर, एस.एस.–** शैक्षिक मनोविज्ञान प्रकाशन 2014 विनोद पुस्तक मन्दिर अगरा।
7. **पाठक पी.डी. एवं त्यागी गुरूसरन दास–**आधुनिक भारत एवं शिक्षा, प्रकाशन 2020, विनोद पुस्तक मन्दिर अगरा।